

# भारत की आजादी के युद्ध में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान: एक अध्ययन

Dr. Anil Kumar\*

BPSMV, Regional Center, Lula Ahir, Teaching Assistant, History

*शोध सार: प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। हालांकि कुछ अन्य विद्वानों का नजरिया इसके विपरीत है। अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था। हालांकि बाद में (लगभग 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (विशेषकर मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया। समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी। इन परिस्थितियों के बावजूद भी महिलाओं ने राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। रजिया सुल्तान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनीं। गोंड की महारानी दुर्गावती ने 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ अहमदनगर की रक्षा की। जहांगीर की पत्नी नूरजहाँ ने राजशाही शक्ति का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रूप में पहचान हासिल की। मुगल राजकुमारी जहाँआरा और जेबुन्निसा सुप्रसिद्ध कवियत्रियाँ थीं और उन्होंने सत्तारूढ़ प्रशासन को भी प्रभावित किया। शिवाजी की माँ जीजाबाई को एक योद्धा और एक प्रशासक के रूप में उनकी क्षमता के कारण क्वीन रीजेंट के रूप में पदस्थापित किया गया था। दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने गाँवों, शहरों और जिलों पर शासन किया और सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों की शुरुआत की। इस शोध-पत्र में भारत की आजादी के युद्ध में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदानों के अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है।*

*मुख्य शब्द: आजादी, मुगल साम्राज्य, महिलाओं की आजादी और अधिकार।*

-----X-----

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं। आजादी के युद्ध में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के विरुद्ध पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की बेटियों ने अपना कर्तव्य निभाया। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध कदम उठाए, वीरता और साहस तथा नेतृत्व की क्षमता का अभूतपूर्व परिचय दिया। 1857 के बगावत के समय राजघराने की महिलाएं आजाद भारत का सपना पूरा करने के लिए पुरुषों के साथ एकजुट हुईं। इनमें

प्रमुख थीं इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर और झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई। 1857 की हार के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का स्थान ब्रिटिश सरकार ने ले लिया और ब्रिटिश शासन एक ऐतिहासिक सच बन गया। भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर मातंगिनी हाजरा और सरोजिनी नायडू आदर्श के रूप में देखी जाने लगी थीं। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय महिलाओं ने सामाजिक बदलावों के लिए विद्रोही गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। महिलाओं की भागीदारी केवल सत्याग्रह तक ही सीमित नहीं थी। 19वीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ महिलाओं की घनिष्टता बढ़ी और भारत के राष्ट्रीय गतिविधियों में उनका योगदान प्रारंभ हुआ। इतिहास के पन्नों को पलटते हुए जो-जो हम पीछे जाएंगे महिलाओं के अग्रय साहस से भरी कई कहानियां हमारे देश के गौरव को बढ़ाती दिखाई दे

जाएंगी। भारतीय वीरांगनाओं का जिक्र किए बिना 1857 से 1947 तक की स्वाधीनता की दास्तान शायद अधूरी ही रह जाएगी। यह भारत की नारी ही थी जिसने अंग्रेजों को लोहे के चने चबवा दिए। इन वीरांगनाओं में से अधिकतर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे किसी रजवाड़े में पैदा नहीं हुईं बल्कि आम आदमी के घर जन्म लेकर, अपनी योग्यता की बदौलत उच्चतर मुकाम तक पहुंचीं।

1857 की गदर में दो नाम बड़ी शान से लिए जाते हैं। पहला नाम बेगम हजरत महल जिन्होंने लखनऊ में क्रांति का झंडा बुलंद किया और दूसरी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई का। इतिहास में और पीछे चलें तो एक और नाम सुनने को मिलेगा। वह नाम है वर्ष 1824 में फिरंगियों भारत छोड़ो का बिगुल बजाने वाली कित्तूर (कर्नाटक) की रानी चेनम्मा का। जिन्होंने रणचंडी का रूप धरकर अपने अदम्य साहस व फौलादी संकल्प की बदौलत अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व रानी चेनम्मा काशीवास करना चाहती थीं पर उनकी यह चाह पूरी न हो सकी। क्या संयोग था कि रानी चेनम्मा की मौत के 6 साल बाद काशी में ही लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। यकीनन रानी चेनम्मा को अंग्रेजों से लोहा लेने वाली प्रथम वीरांगना माना जाता है। यह भी कम ही लोगों को पता होगा कि बैरकपुर में मंगल पांडेय को चर्बी वाले कारतूसों के बारे में सर्वप्रथम मातादीन ने बताया और मातादीन को इसकी जानकारी उसकी पत्नी लज्जो ने दी। लज्जो अंग्रेज अफसरों के यहां काम करती थी, जहां उसे यह सुराग मिला कि अंग्रेज गाय की चर्बी वाले कारतूस इस्तेमाल करने जा रहे हैं। इतना ही अगर यह कहा जाए कि 1857 की कदर की चिंगारी भडकाने और उसे हवा देने का काम नारी शक्ति ने किया तो यह भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। 9 मई 1857 की घटना को ही ले लीजिए जब मेरठ में विद्रोह करने पर 85 भारतीय सिपाहियों को हथकड़ी-बेडियां पहनाकर जेल भेज दिया गया। दूसरी ओर अन्य सिपाही उस शाम को घूमने निकले तब मेरठ शहर की महिलाओं ने उन सिपाहियों को धिक्कारते हुए अपने साथियों का साथ देने का कहा। मुरादाबाद के तत्कालीन जिला जज जेसी विल्सन ने इस घटना का वर्णन करते हुए लिखा है 'महिलाओं ने कहा कि-छिः! तुम्हारे भाई जेल खाने में और तुम यहां बाजार में मक्खियां मार रहे हो? तुम्हारे ऐसे जीने पर धिक्कार है।' इतना सुनते ही सिपाही जोश में आ गए और अगले ही दिन 10 मई को जेलखाना तोड़कर उन्होंने सभी कैदी सिपाहियों को छुड़ा लिया और उसी रात्रि क्रांति का बिगुल बजाते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान कर गए, जहां से 1857 की क्रांति की ज्वाला चारों दिशाओं में फैल गई।

लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने किया। अपने नाबालिग पुत्र बिरजिस कादर को गद्दी पर बिठाकर उन्होंने अंग्रेजी सेना का स्वयं मुकाबला किया। उनमें संगठन की अभूतपूर्व क्षमता थी और इसी कारण अवध के जमींदार, किसान और सैनिक उनके नेतृत्व में आगे बढ़ते रहे। आलमबाग की लड़ाई के दौरान अपने जांबाज सिपाहियों की उन्होंने भरपूर हौसला आफजाई की और हाथी पर सवार होकर अपने सैनिकों के साथ दिन-रात युद्ध करती रहीं। लखनऊ में पराजय के बाद वह अवध के देहातों में चली गईं और वहां भी क्रांति की चिंगारी सुलगाई। घुड़सवारी और तलवार चलाने में माहिर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और शौर्य के किस्से तो जन-जन में सुने ही होंगे। नवम्बर 1835 को बनारस में मोरोपंत तांबे के घर जन्मी लक्ष्मीबाई का बचपन नाना साहब के साथ कानपुर के बिठूर में बीता। सन् 1855 में पति राजा गंगाधर राव की मौत के पश्चात उन्होंने झांसी का शासन सम्भाला पर अंग्रेजों ने उन्हें और उनके दत्तक पुत्र को शासक मानने से इंकार कर दिया। लक्ष्मीबाई ने झांसी में ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर दी और बाद में तात्या टोपे की मदद से ग्वालियर पर भी कब्जा किया। वीरांगनाओं की सूची को आगे बढ़ाए तो मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर की बेगम जीनत महल का नाम भी सामने आएगा जिन्होंने दिल्ली और आस-पास के क्षेत्रों में स्वातंत्र्य योद्धाओं को संगठित किया और देश प्रेम का परिचय दिया। सन् 1857 की क्रांति में बहादुरशाह जफर को प्रोत्साहित करने वाली बेगम जीनत महल ने ललकारते हुए कहा था 'यह समय गजलें कह कर दिल बहलाने का नहीं है, बिठूर से नाना साहब का पैगाम लेकर देशभक्त सैनिक आए हैं, आज सारे हिन्दुस्तान की आंखें दिल्ली की ओर व आप पर लगी हैं, खानदान-ए-मुगलिया का खून हिन्द को गुलाम होने देगा तो इतिहास उसे कभी क्षमा नहीं करेगा।' बाद में बेगम जीनत महल भी बहादुरशाह जफर के साथ ही बर्मा चली गईं। इसी प्रकार दिल्ली के शहजादे फिरोजशाह की बेगम तुकलाई सुलतान जमानी बेगम को जब दिल्ली में क्रांति की सूचना मिली तो उन्होंने ऐशोआराम का जीवन जीने की बजाय युद्ध शिविरों में रहना पसंद किया और वहीं से सैनिकों को रसद पहुंचाने और घायल सैनिकों की सेवा का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया। अंग्रेजी हुकूमत इनसे इतनी भयभीत हो गई थी कि कालांतर में उन्हें घर में नजरबंद कर उन पर बम्बई न छोड़ने और दिल्ली प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। बेगम हजरत महल और रानी लक्ष्मीबाई के सैनिक दल में तमाम महिलाएं शामिल थीं। लखनऊ में बेगम हजरत महल की महिला सैनिक दल का नेतृत्व रहीमी के हाथों में था, जिसने फौजी भेष अपनाकर तमाम महिलाओं को तोप और बंदूक चलाना सिखाया। रहीमी की अगुवाई में इन

महिलाओं ने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया। लखनऊ की तवायफ हैदरीबाई के यहां तमाम अंग्रेज अफसर आते थे और कई बार क्रांतिकारियों के खिलाफ योजनाओं पर बात किया करते थे। हैदरीबाई ने पेशे से परे अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए इन महत्वपूर्ण सूचनाओं को क्रांतिकारियों तक पहुंचाया और बाद में वह भी रहीमी के सैनिक दल में शामिल हो गईं।

ऐसी ही एक वीरांगना ऊदा देवी थीं, जिनके पति चिनहट की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए। ऐसा माना जाता है कि डब्ल्यू गार्डन अलकजेंडर एवं तत्पश्चात क्रिस्टोफर हिबर्ट ने अपनी पुस्तक 'द ग्रेट म्यूटिनी' में लखनऊ में सिकन्दरबाग किले पर हमले के दौरान जिस वीरांगना के अदम्य साहस का वर्णन किया है, वह ऊदा देवी ही थीं। ऊदा देवी ने पीपल के घने पेड़ पर छिपकर लगभग 32 अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। अंग्रेज असमंजस में पड़ गये और जब हलचल होने पर कैप्टन वेल्स ने पेड़ पर गोली चलाई तो ऊपर से एक मानवाकृति गिरी। नीचे गिरने से उसकी लाल जैकेट का ऊपरी हिस्सा खुल गया, जिससे पता चला कि वह महिला है। उस महिला का साहस देख कैप्टन वेल्स की आंखें नम हो गईं, तब उसने कहा कि यदि मुझे पता होता कि यह महिला है तो मैं कभी गोली नहीं चलाता। ऊदा देवी का जिक्र अमृतलाल नागर ने अपनी कृति 'गदर के फूल' में बकायदा किया है। इसी तरह की एक वीरांगना आशा देवी थीं, जिन्होंने 8 मई 1857 को अंग्रेजी सेना का सामना करते हुए शहादत पाई। आशा देवी का साथ देने वाली वीरांगनाओं में रनवीरी वाल्मीकि, शोभा देवी, वाल्मीकि महावीरी देवी, सहेजा वाल्मीकि, नामकौर, राजकौर, हबीबा गुर्जरी देवी, भगवानी देवी, भगवती देवी, इंदर कौर, कुशल देवी और रहीमी गुर्जरी इत्यादि शामिल थीं। ये वीरांगनाएं अंग्रेजी सेना के साथ लड़ते हुए शहीद हो गईं।

बेगम हजरत महल के बाद अवध के मुक्ति संग्राम में जिस दूसरी वीरांगना ने प्रमुखता से भाग लिया, वे थीं गोंडा से 40 किलोमीटर दूर तुलसीपुर रियासत की रानी राजेश्वरी देवी। राजेश्वरी देवी ने होपग्रांट के सैनिक दस्तों से जमकर मुकाबला लिया। अवध की बेगम आलिया ने भी अपने अद्भुत कारनामों से अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दी। बेगम आलिया 1857 के एक वर्ष पूर्व से ही अपनी सेना में शामिल महिलाओं को शस्त्रकला में प्रशिक्षण देकर सम्भावित क्रांति की योजनाओं को मूर्त रूप देने में संलग्न हो गई थीं। अपने महिला गुप्तचर के गुप्त भेदों के माध्यम से बेगम आलिया ने समय-समय पर ब्रिटिश सैनिकों से युद्ध किया और कई बार अवध से उन्हें भगाया। इसी प्रकार अवध के सलोन जिले में सिमरपहा के तालुकदार वसंत सिंह बैस की पत्नी और बाराबंकी के मिर्जापुर रियासत की रानी

तलमुंद कोइर भी इस संग्राम में सक्रिय रहीं। अवध के सलोन जिले में भदरी की तालुकदार ठकुराइन सन्नाथ कोइर ने विद्रोही नाजिम फजल अजीम को अपने कुछ सैनिक और तोपें, तो मनियारपुर की सोगरा बीबी ने अपने 400 सैनिक और दो तोपें सुल्तानपुर के नाजिम और प्रमुख विद्रोही नेता मेंहदी हसन को दी। इन सभी ने बिना इस बात की परवाह किए हुए कि उनके इस सहयोग का अंजाम क्या होगा, क्रांतिकारियों को पूरी सहायता दी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं की एक अलग टुकड़ी 'दुर्गा दल' बनायी हुई थी। इसका नेतृत्व कुशती, घुड़सवारी और धनुर्विद्या में माहिर झलकारीबाई के हाथों में था। झलकारीबाई ने कसम उठायी थी कि जब तक झांसी स्वतंत्र नहीं होगी, न ही मैं श्रृंगार करूंगी और न ही सिन्दूर लगाऊंगी। अंग्रेजों ने जब झांसी का किला घेरा तो झलकारीबाई जोशो-खरोश के साथ लड़ी। चूंकि उसका चेहरा और कद-काठी रानी लक्ष्मीबाई से काफी मिलता-जुलता था, सो जब उसने रानी लक्ष्मीबाई को घिरते देखा तो उन्हें महल से बाहर निकल जाने को कहा और स्वयं घायल सिंहनी की तरह अंग्रेजों पर टूट पड़ी और शहीद हो गयीं। झलकारीबाई का जिक्र मराठी पुरोहित विष्णुराव गोडसे की कृति 'माझा प्रवास' में भी मिलता है। रानी लक्ष्मीबाई की सेना में जनाना फौजी इंचार्ज मोतीबाई और रानी के साथ चैबीस घंटे छाया की तरह रहने वाली सुन्दर-मुन्दर और काशीबाई सहित जूही और दुर्गाबाई भी दुर्गा दल की ही सैनिक थीं। इन सभी ने अपने जान की बाजी लगाकर रानी लक्ष्मीबाई पर आंच नहीं आने दी और अन्तोगत्वा वीरगति को प्राप्त हुईं। कानपुर 1857 की क्रांति का प्रमुख गवाह रहा है। पेशे से तवायफ अजीजनबाई ने यहां क्रांतिकारियों की संगत में 1857 की क्रांति में लौ जलायी। एक जून 1857 को जब कानपुर में नाना साहब के नेतृत्व में तात्याटोपे, अजीमुल्ला खान, बालासाहब, सूबेदार टीका सिंह और शमसुद्दीन खान क्रांति की योजना बना रहे थे तो उनके साथ उस बैठक में अजीजनबाई भी थीं। इन क्रांतिकारियों की प्रेरणा से अजीजन ने मस्तानी टोली के नाम से 400 महिलाओं की एक टोली बनायी जो मर्दाना भेष में रहती थीं। एक तरफ ये अंग्रेजों से अपने हुस्न के दम पर राज उगलवार्ती, वहीं नौजवानों को क्रांति में भाग लेने के लिये प्रेरित करतीं। सतीचैरा घाट से बचकर बीबीघर में रखी गई 125 अंग्रेज महिलाओं और बच्चों की रखवाली का कार्य अजीजनबाई की टोली के ही जिम्मे था। बिठूर के युद्ध में पराजित होने पर नाना साहब और तात्याटोपे तो पलायन कर गये लेकिन अजीजन पकड़ी गयी। युद्धबंदी के रूप में उसे जनरल हैवलॉक के समक्ष पेश किया गया। जनरल हैवलॉक उसके सौन्दर्य पर रीझे हुए बिना न रह सका और प्रस्ताव रखा

कि यदि वह अपनी गलतियों को स्वीकार कर क्षमा मांग ले तो उसे माफ कर दिया जायेगा। किंतु अजीजन ने एक वीरांगना की भांति उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और पलट कर कहा कि माफी तो अंग्रेजों को मांगनी चाहिए, जिन्होंने इतने जुल्म डाये। इतने पर आग बबूला हो हैवलॉक ने अजीजन को गोली मारने के आदेश दे दिये। क्षण भर में ही अजीजन का अंग-प्रत्यंग धरती मां की गोद में सो गया।

कानपुर के स्वाधीनता संग्राम में मस्तानीबाई की भूमिका भी कम नहीं है। बाजीराव पेशवा के लश्कर के साथ ही मस्तानीबाई बिठूर आई थी। अप्रतिम सौन्दर्य की मलिका मस्तानीबाई अंग्रेजों का मनोरंजन करने के बहाने उनसे खुफिया जानकारी हासिल कर पेशवा को देती थी। नाना साहब की मुंहबोली बेटे मैनावती भी देशभक्ति से भरपूर थी। नाना साहब बिठूर से पलायन कर गये तो मैनावती यहीं रह गयी। जब अंग्रेज नाना साहब का पता पूछने पहुंचे तो मौके पर 17 वर्षीया मैनावती ही मिली। नाना साहब का पता न बताने पर अंग्रेजों ने मैनावती को जिन्दा ही आग में झोंक दिया। इतिहास के पन्नों में न जाने ऐसी कितनी दास्तान हैं, जहां वीरांगनाओं ने अपने साहस और जीवटता के दम पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। मध्यप्रदेश में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई ने 1857 के संग्राम के दौरान अंग्रेजों का प्रतिकार किया और घिर जाने पर आत्मसमर्पण करने की बजाय स्वयं को खत्म कर लिया। मध्य प्रदेश में ही जैतपुर की रानी ने अपनी रियासत की स्वतंत्रता की घोषणा कर दतिया के क्रांतिकारियों को लेकर अंग्रेजी सेना से मोर्चा लिया। तेजपुर की रानी भी इस संग्राम में जैतपुर की रानी की सहयोगी बनकर लड़ीं। मुजफ्फरनगर के मुंडभर की महावीरी देवी ने 1857 के संग्राम में 22 महिलाओं के साथ मिलकर अंग्रेजों पर हमला किया। अनूप शहर की चैहान रानी ने घोड़े पर सवार होकर हाथों में तलवार लिए अंग्रेजों से युद्ध किया और अनूप शहर के थाने पर लगे यूनियन जैक को उतार कर हरा राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया। इतिहास गवाह है कि 1857 की क्रांति के दौरान दिल्ली के आस-पास के गावों की लगभग 255 महिलाओं को मुजफ्फरनगर में गोली से उड़ा दिया गया था। 1857 की गदर में भारतीय महिलाओं में गजब की देश की भक्ति देखने को मिली।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आर.सी. मजूमदार और ए.डी. पुसल्कर (संपादक): भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति. वॉल्यूम, वैदिक युग. मुंबई: भारतीय विद्या भवन 1951, pp. 394

क्लेरिस्स बदर वूमन इन ऐन्शान्ट इण्डिया. ट्रबनर्स ओरिएण्टल सीरीज. रौत्लेदगे, 2001

Pruthi, Raj Kumar; Rameshwari Devi and Romila Pruthi (2001). Status and Position of Women: In Ancient, Medieval and Modern India. Vedam books.

Mishra, R. C. (2006). Towards Gender Equality. Authorspress

---

## Corresponding Author

Dr. Anil Kumar\*

BPSMV, Regional Center, Lula Ahir, Teaching Assistant, History

[dharam.jajoria@gmail.com](mailto:dharam.jajoria@gmail.com)